1. कबीर

कवि परिचय –

भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि एवं संतकाव्य धारा के प्रवर्तक के रूप में विख्यात कबीर एक महान संत, सच्चे समाज-सुधारक कवि थे। इनका जन्म विक्रम सं. 1455 (कबीर-चरित्रबोध में उल्लिखित अनुसार) अर्थात् 1398 ई. में काशी में हुआ। इनका लालन-पालन नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने किया। कबीर अशिक्षित थे; परन्तु बहुश्रुत थे। वे ज्ञान और अनुभव से समृद्ध थे। वे स्वामी रामानन्द के शिष्य थे। वे एक युग पुरुष थे, उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी।

अपनी अनुभूतियों को सहज एवं प्रभावशाली ढंग से जनमानस के हृदय तक पहुँचाने में सिद्धहस्त कबीर ने अपनी वाणी द्वारा धार्मिक संकीर्णता एवं बाह्याडम्बरों, कुरीतियों आदि का विरोध कर राम-रहीम की एकता के माध्यम से मत-मतान्तरों से ऊपर उठकर मानवता की स्थापना का शंखनाद किया। वे आत्मिक साधना एवं मन की पूजा पर विश्वास करते थे। मध्यकाल के क्रांति पुरुष होने के कारण कबीर ने समाज के भीतरी और बाहरी दोनों पक्षों पर तीखे व्यंग्य किए। रूढ़ियों से मुक्त सामाजिक समरसता की स्थापना का संदेश इनके काव्य में प्रमुख रूप से मिलता है। कबीर का शिल्प सरल, सहजग्राह्य है। उनका प्रतीक-विधान दैनिक जीवन से संबंधित है। भाषा पंचमेल खिचड़ी, सधुक्कड़ी है, जिसमें राजस्थानी, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, ब्रज आदि भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनकी रचनाएँ 'बीजक' में संकलित हैं। इनका देहावसान सं. 1575 (1518 ई.) को मगहर में हुआ। इस संबंध में एक दोहा प्रचलित है–

संवत् पन्द्रह सौ पिचत्तर, किया मगहर कूँ गौन। माघ सुदी एकादशी रलो पौन में पौन।

पाठ-परिचय –

प्रस्तुत संकलन में साखियों और पदों के माध्यम से कबीरदास ने गुरु महिमा का महत्व बताया है। उनकी दृष्टि में सद्गुरु और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। गुरु ज्ञान रूपी दीपक शिष्य के हृदय में प्रज्ज्वलित कर संसार-सागर से पार होने का मार्ग सुझाता है। जब भगवान की कृपा होती है तभी सद्गुरु की प्राप्ति होती है। इसलिए मनुष्य को सदैव ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए। यह संसार सेंमल के पुष्प की तरह क्षण भंगुर है, इसकी चमक-दमक में नहीं फँसना चाहिए। चंचल मन को संसार के आकर्षण से खींचकर परमात्मा के स्मरण में लगाने से ही कल्याण सम्भव है। यह जीवात्मा परमात्मा से कमलिनी नाल और जल की तरह जुड़ा हुआ है। कबीर के अनुसार जब ज्ञान रूपी आँधी का आगमन होता है तब हृदयगत समस्त विकार-माया, मोह, तृष्णा आदि नष्ट हो जाते हैं और मानव का हृदय प्रभु की प्रेम रूपी बरसात से निर्मल, पवित्र हो जाता है तथा जीवात्मा परमब्रह्म परमेश्वर से मिलने के लिए आतुर होने लगती है। कबीर ने साधना पथ पर चलने के लिए मूर्खों का साथ त्यागने पर भी जोर दिया है।

मूल पाठ –

दोहे

1. गुरु गोविन्द तौ एक है, दूजा यहु आकार।
आपा मेट जीवित मरै, तो पावै करतार।।

2. ज्ञान प्रकासा गुरु मिला, सों जिनि बीसरिं जाइ।
जब गोविंद क्रिपा करी, तब गुरु मिलिया आइ।।

3. पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगै थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

4. बूढ़ा था पै ऊबरा, गुरु की लहरि चमंकि।
भेरा देख्या जरजरा,(तब) उतरि पड़े फरंकि।।

5. कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिस लागी लाइ।
हरि सुमरिन हाथौं घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ।।

6. पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे कूँ सोभा नहीं, देख्या ही परमान।।

7. चिंता तौ हरि नाँव की, और न चितवै दास।
जे कछु चितवैं राम बिन, सोइ काल की पास।।

8. नैनां अंतरि आव तू, नैन झाँपि तोहि लेउँ।
ना हौ देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देउँ।।

9. बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मन नाहीं विश्राम।।

10. मूरिष संग न कीजिए, लोहा जल न तिराइ।
कदली सीप भुवंग मुख, एक बूँद तिहूँ भाइ।।

11. यहु ऐसा संसार है, जैसा सेंवल फूल।
दिन दस के व्यौहार कौं, झूठे रंग न भूलि।।

12. माषी गुड़ मैं गड़ि रही, पंष रही लपटाइ ।
ताली पीटै सिरि धुनैं, मीठै बोई माइ।।

पद

(1) काहे री नलिनी तूँ कुम्हलानी।
तेरे ही नालि सरोवर पानी।।

जल में उतपत्ति जल में बास, जल में नलिनी तोर निवास।

ना तलि तपति न उपरि आग, तोर हेत कहु कासनि लागि।।
कहै कबीर जे उदकि समान, ते नंहि मुए हमारे जान।

(2) संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे!
भ्रम की टाटी सबै उड़ाणीं, माया रहै न बाँधी रे।।टेक।।
हितचित्त की दोउ थूँनी गिरानी, मोह बलींडा टूटा।
त्रिस्नां छांनि परी घर ऊपरि, कुबधि का भांडा फूटा।।
जोग जुगति कर संतौ बांधी, निरचू चुवै न पांणीं।
कूड़–कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जांणी ।।
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरी जन भींनां।
कहै कबीर भांन के प्रगटें, उदित भया तम षीनां।।

शब्दार्थ–

आकार – शरीर, उपाधि / आपा – अहंकार, खुदी / करतार – ईश्वर / प्रकासा – प्रकाशित हुआ / जिनि – नहीं / बीसरि – भूलना / पाछै – पीछे / लोक वेद – लौकिक और वैदिक मान्यताएँ / थैं – से / दीपक – ज्ञान रूपी दीपक / पै – किन्तु / लहरि – कृपा, ज्ञान की तरंग / चमंकि – चमकी प्रकाशित हुई / भेरा – भेला एक तरह की नाव / जरजरा – जीर्ण / फरंकि – अलग होकर, फड़ककर / चमंकिया – चमक गया अर्थात् तप्त हो गया / चहुँ – चारों और / लाइ – आग / बेगे – शीघ्र / पारब्रह्म – ईश्वर, परमात्मा / तेज – प्रकाश / उनमान – अनुमान कैसा है / परमान – प्रमाण / कहिवे – कहने / कूँ – के लिए / चिंता – चिन्तन / चितवै – चिन्तन करना / पास – पाश बन्धन / नैनाँ – नेत्र / अंतरि – भीतर / आव – आ / झँपेउँ – बन्द कर लूँ / नाँ – नहीं / हौं – मैं / कूँ – को / जोवती – प्रतीक्षा करती हूँ / बाट – राह, मार्ग / जिव – जी, हृदय, जीव / मनि – मन में / मूरषि–मूर्ख / कदली – केला / भुवंग – सर्प / नलिनी – कमलिनी, जीव (आध्यात्मिक अर्थ) / नालि – कमल नाल जड़, सम्पर्क (आ.अर्थ) / सरोवर – तालाब, आत्मिक चेतना का प्रसार (आ. अर्थ) उतपति – उत्पत्ति / हेतु – प्रेम, आसक्ति / उदकि – जल / कासनि – कहाँ से, किससे / टाटी – टटिया या पर्दा / दुचिते – चित्त की दो अवस्थाएँ, विषयासक्ति और बाह्याचार / थूनि – खम्भा, स्तम्भ / बलींडा – छाजन में बीच का बेड़ा या बल्ली / छानि – छप्पर / धर – धरा, पृथ्वी / दुरमति – कुबुद्धि / भांडा – बर्तन / भीना – भीग गया, रससिक्त / भान – सूर्य / तम – अंधकार, अज्ञान / षीनां – नष्ट।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. कबीर के अनुसार सद्गुरु ने हाथ में क्या दिया ?
(क) ज्ञान का दीपक (ख) वेद शास्त्र का दीपक
(ग) लोक मान्यताओं का दीपक (घ) मिट्टी का दीपक ( )

2. कबीर के अनुसार सत्गुरु कैसे प्राप्त होता है ?

(क) ज्ञान प्रकाशित होने पर (ख) भगवान की कृपा होने पर

(ग) शास्त्रों का अध्ययन करने पर (घ) तीर्थ भ्रमण करने पर ( )

3. कबीर दास ने किस प्रकार की आँधी आने की बात कही है ?

(क) धूल भरी आँधी (ख) ज्ञान की आँधी

(ग) तेज आँधी पानी (घ) कूड़ा-कर्कट उड़ाने वाली आँधी( )

4. कबीर भक्ति काल की किस भक्तिधारा के प्रतिनिधि भक्त कवि माने जाते हैं –

(क) राम-भक्ति धारा (ख) कृष्ण भक्ति धारा

(ग) ज्ञानश्रयी निर्गुण धारा (घ) प्रेमाश्रयी (सूफी) ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. कबीर ने किसका चिन्तन करने को कहा है ?
2. कबीर ने इस संसार को किसके फूल के समान बताया है ?
3. 'संतौ आई ज्ञान की आँधी रे!' में कौनसा अलंकार है ?लिखिए।
4. कवि नेत्रों के भीतर किसके आने पर नेत्र बन्द करना चाहता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. कबीर के अनुसार मूर्ख का साथ क्यों नहीं करना चाहिए ?
2. जीवात्मा किससे मिलने के लिए रात–दिन तड़फता है ?
3. कबीर की दृष्टि में कौन से लोग कभी नहीं मरते ?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. पठित दोहों के आधार पर गुरु के महत्त्व का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. 'जल में उतपति जल में बास, जल में नलिनी तोर निवास' का मूलभाव लिखिए।
3. 'माषी गुड़ में गड़ि रही, पंख रही लपटाय। ताली पीटै सिरि धुनै मीठे बोई माय'।।
   दोहे में निहित काव्य–सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए।
4. ''पारब्रह्म के तेज का कैसा है उनमान।'' दोहे में कबीर ने पारब्रह्म के तेज के सम्बन्ध में क्या कहा है ?
5. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) 'गुरु गोविन्द ..... पावै करतार'।।

   (ख) 'बूढ़ा था पै ..... पडे फरंकि'।।

   (ग) 'संतौ भाई ..... कुबधि का भांडा फूटा'।।

   (घ) 'ना तल तपति ..... हमारे जान'।।

•••